म्हारा कानुड़ा गिरधारी | By Liyaqat Ali

म्हारा कानुड़ा गिरधारी
खीचड़ खा ले रे बनवारी
कर्मा विनती कर कर हारी
बेटी जाटा री.....
बेटी जाटा री.....

बापू दूजे गाँव सिध्दारो
थारो मंदिर यो समलायो
सारो पूजा ढंग सिखायो
म्हारा बनवारी .....
म्हारा कानुड़ा.....

बेटी तड़के उठ कर जाइजे
म्हारा गिरधर ने नेहलाइजे
पूजा करके भोग लगाइजे
बेटी जाटा री हो.....
म्हारा कानुड़ा.....

मीठे पानी से नेहलायो
ऊँचे आसान पे बैठायो
लम्बो केसर तिलक लगायो
बेटी जाटा री .....
म्हारा कानुड़ा.....

जड़कर मंदिरया में ताली
कर्मा गीत गावती चाली
ल्यायी खीचड़ लो भर थाली
बेटी जाटा री .....
म्हारा कानुड़ा.....

सुबह छाछ राबड़ी ल्याऊं
मीठी गुड़ री खीर बनाऊं
उठकर घोरा घोर जिमाउं थाने गिरधारी
म्हारा कानुड़ा.....

म्हारी भूल बता दो सारी
क्यों थे रूठ्या श्याम बिहारी
म्हारे गाल्या पड़ती थारी
मानो बनवारी.....
म्हारा कानुड़ा.....

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%ae%e0%a5%8d%e0%a4%b9%e0%a4%be%e0%a4%b0%e0%a4%be-%e0%a4%95%e0%a4%be%e0%a4%a8%e0%a5%81%e0%a4%a1%e0%a4%bc%e0%a4%be-%e0%a4%97%e0%a4%bf%e0%a4%b0%e0%a4%a7%e0%a4%be%e0%a4%b0%e0%a5%80-by-liyaqat-ali/